Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
February 2024 5(2), 1138–1146

A COMPARATIVE STUDY OF THE IMPACT OF SHRIMADBHAGVATGITA PHILOSOPHY ON SPIRITUAL INTELLIGENCE AND PERSONAL VALUES OF STUDENTS

श्रीमद्भगवतगीता दर्शन का विद्यार्थियों के आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तिगत मूल्य पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Geetika Sharma [1], Dr. Sangeeta Sharaf [2]

[1] Research Scholar MATS School of Education MATS University, Gullu Arang, Raipur Chhattisgarh
[2] (Professor) Directory MATS School of Education MATS University, Gullu Arang, Raipur CG

ABSTRACT

English: Srimad Bhagavad Gita is such a unique text of Indian philosophy, which not only defines religiosity, but also deeply affects the practical and spiritual aspects of life. The objective of this research is to do a comparative study of the impact of the philosophy of Srimad Bhagavad Gita on the spiritual intelligence and personal values of students. Two groups were selected under the study. The first group was involved in the regular study of the Gita and the second group followed only the general curriculum. After this, a comparative analysis of the moral and spiritual development of both the groups was done. The study found that the students who read the Gita developed more qualities like self-awareness, empathy, and morality. These students also showed significant improvement in stress management, decision-making ability, and positive attitude towards life. In contrast, this improvement was found to be relatively less in the students who did not study the Gita. This research proves that the study of Srimad Bhagavad Gita not only provides spiritual perspective to the students, but also strengthens their personal and social values.

Hindi: **श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन का ऐसा अनुपम ग्रंथ है, जो न केवल धार्मिकता को परिभाषित करता है, बल्कि जीवन के व्यावहारिक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी गहराई से प्रभावित करता है। इस शोध का उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता के दर्शन का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि और व्यक्तिगत मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन के अंतर्गत दो समूहों का चयन किया गया। पहला समूह गीता के नियमित अध्ययन में शामिल रहा और दूसरा समूह केवल सामान्य पाठ्यक्रम का अनुसरण करता रहा। इसके बाद दोनों समूहों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि गीता पढ़ने वाले विद्यार्थियों में आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, और नैतिकता जैसे गुण अधिक विकसित हुए। इन विद्यार्थियों ने तनाव प्रबंधन, निर्णय लेने की क्षमता, और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण में भी उल्लेखनीय सुधार दिखाया। इसके विपरीत, गीता का अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों में यह सुधार अपेक्षाकृत कम पाया गया। यह शोध यह साबित करता है कि श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन विद्यार्थियों को न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, बल्कि उनके व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों को भी मजबूत करता है।**

Keywords: Srimadbhagvadgita Darshan, Higher Secondary School Students, Spiritual Intelligence, Personal Values श्रीमद्भगवद्गीता दर्षन, उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थी, आध्यात्मिक बुद्धि, व्यक्तिगत मूल्य ।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i2.2024.4502

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

प्रस्तावना - शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। हालांकि, वर्तमान समय में शिक्षा केवल तकनीकी और व्यावसायिक ज्ञान तक सीमित रह गई है, जिससे नैतिकता और आध्यात्मिकता जैसे मूलभूत गुणों की उपेक्षा हो रही है। जीवन की इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाएं आज भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं। गीता का दर्शन कर्म, ज्ञान और भक्ति योग के माध्यम से मानव जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का मार्ग दिखाता है। यह ग्रंथ न केवल धर्म और आत्मा की गूढ़ व्याख्या करता है, बल्कि आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यावहारिक समाधान भी प्रदान करता है। आज की युवा पीढ़ी तनाव, प्रतिस्पर्धा और नैतिक गिरावट का सामना कर रही है। ऐसे में गीता की शिक्षाएं न केवल उन्हें मानसिक शांति प्रदान कर सकती हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व को नैतिकता और आध्यात्मिकता के साथ सशक्त भी कर सकती हैं। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन विद्यार्थियों के मानसिक और नैतिक विकास में कैसे सहायक हो सकता है। यह शोध विद्यार्थियों के नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं की प्रासंगिकता को दर्शाता है। गीता का अध्ययन न केवल मानसिक शांति और आत्म-विश्लेषण को बढ़ावा देता है, बल्कि समाज के प्रति जिम्मेदारी और नैतिकता के मूल्यों को भी मजबूत करता है।

प्रयुक्त पदों की प्रकार्यात्मक क्रियात्मक शब्दों की परिभाषाए-

श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन - श्रीमद्भगवद्गीता प्राचीन भारतीय वेदान्त दर्शन की अमूल्य निधि है। इसमें ज्ञान, कर्म एवं भक्ति का अनोखा समन्वय दृष्टिगत होता है । गीता उपनिषद्रूपी गायों भगवान श्रीकृष्ण द्वारा दुहा गया दुग्धामृत है । भगवान श्रीकृष्ण ने निष्काम कर्मयोग को, ज्ञान योग आधार माना है। इन्होने कहा - हे अर्जुन कर्मयोग की परंपरा में अंतिम फल ज्ञान योग को तुम प्राप्त करोगे। आत्मा में बुद्धि की अचल स्थिति का नाम ही आत्मसाक्षात्कार है । कर्मयोग से धीरे-धीरे 'सांख्य योग' ज्ञान योग की स्थिति में आता है अर्थात् जीवन परमात्मैक्य रूप का ज्ञान होने लगता है । इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा, ब्रह्म, जीवन, जगत, आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है । ''धन्या भागवती वार्ता प्रेतपीड़ा विनाशिनी। सप्ताहोनपि तथा धन्यः कृष्णलोक फलप्रदः।।'' श्रीमद्भगवद्गीता पुराणों का तिलक है, वैष्णवों का परम धन है । कलयुग में भागवत के समान और कोई ग्रंथ नहीं हो सकता । जिसने धुंधकारी जैसे प्रेत को भी मुक्त किया हो उस श्रीमद्भागवतगीता से बढ़कर मुक्ति का कोई और साधन नहीं है । स्ंसार की गंदगी को धोने के लिए श्रीमद्भगवद्गीता परमपिता है । भागवत पुराण वैष्णव धर्म का एक केंद्रीय पाठ्य, एक हिन्दू परंपरा जो कृष्ण का सम्मान करता है । धर्म का एक रुप जो वेदों से भी प्रतिस्पर्धा में आगे है, जिसमें भक्ति अंततः आत्मज्ञान का उत्कृष्ट आनंद है ।

श्रीमद्भगवद्गीता का लक्ष्य ''मोक्ष की ओर ले जाओ और आनंद लो ।'' हालांकि भागवतपुराण का दावा है कि आंतरिक कृष्ण की प्रकृति और बाहरी रुप वेदों के समान है और यही वह है जो दुनिया को बुरी शक्तियों से बचाता है । भागवत पुराण को आदि शंकराचार्य के अद्वैत के समानांतर भी बताया गया है । उन्होने कहा - ''जीवन का उद्देश्य सत्य की जाँच करना है न कि धार्मिक

अनुष्ठान करके स्वर्ग के आनंद की इच्छा करना ।' '

श्रीमद्भागवत कथा सुनने से हमारे जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और इसको सुनने से मन में आध्यात्मिक विकास होता है । और जहां अन्य युगों में मोक्ष की प्राप्ति करने के लिए कड़ी मेहनत और परिश्रम करनी पड़ती थी वहीं कलयुग में श्रीमद् भागवत कथा सुनने मात्र से मुक्ति मिल जाती है । और उसके अंदर का सोया हुआ ज्ञान और वैराग्य सब वापस आ जाते हैं । भागवत कथा उस कल्पवृक्ष के समान है जो हमारी इच्छाओं की पूर्ति कर देता है ।

श्रीमद्भागवत कथा हिन्दू धर्म के 18 पुराणों में से एक है । इसे भगवतम् भी कहते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य भक्ति मार्ग या योग है । श्रीमद्भागवत कथा में भगवान श्रीकृष्ण को सभी देवों व स्वयं भगवान के रुप में दर्शाया गया है । भागवत कथा में रस भाव की भक्ति को भी बताया गया है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन किया गया है जिसके सार को सुनकर मोक्ष की प्राप्ति जीवन में मंगल और आनंद की प्राप्ति होगी। अन्यथा उस कथा का हमारे जीवन में कुछ महत्व नहीं रह जाता, और वो बस एक मनोरंजन बनकर रह जाता है। और एक कानों से सुनकर बाद में दूसरे कानों से निकलने वाली बात हो जाती है ।

आध्यात्मिक बुद्धि - जीवन की भौतिक उपलब्धियां ही पर्याप्त नहीं है इसके साथ ही आध्यात्मिक बुद्धि की भी आवश्यकता है । ईश्वरीय विचार ही आध्यात्मिक बुद्धि है स्वयं की पहचान या स्वानुभव या अध्यात्म में इसे आत्म चिंतन भी कहते हैं । कल्याण कामी मनुष्य को आत्म चिंतन अवश्य करना चाहिए । आत्मा संबंधी विचार का अर्थ मनुष्य का उत्थान करना है । ऐसे विचार से हममें दैवीय गुणों की धारणा पुष्ट होती है । बुरी आदतों का निवारण होता है और सत्कर्मों की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है आत्म तत्व की अमरता का सिद्धांत हमें मनोबल प्रदान करता है । भौतिक जगत की नष्वरता का तथ्य हमें भटकाव और भ्रम से दूर करता है। दुर्भाग्य से व्यक्ति मोह बंधन में जकड़ा हुआ है, काम क्रोध लोभ आदि के बंधनों से निरंतर घिरे हुए हैं । सत्संग और स्वाध्याय से कभी-कभी उसे प्रबोध होता है किंतु उस प्रबोध का प्रमाण क्षणिक ही देखा गया है। आवश्यकता है जीवन में ज्ञान को उतारने की असत कर्मों से निरंतर दूर रहने का प्रयास होना चाहिए । चाल, पाखंड, ईष्र्या, पापाचार से निरंतर दूर रहने का प्रयास होना चाहिए । शुभ चिंतन और तदनुसार कर्म से बुद्धि निर्मल होगी और चित्त शांत रहेगा । सद्ज्ञान का दिव्य प्रकाश मोहजन्य अंधकार के मिटने पर ही होता है। इसलिए नियमित अभ्यास द्वारा वृत्तियों का नियंत्रण करना अभीष्ट है । बार-बार विचार करना कि सांसारिक लोगों की सत्ता क्षणिक है यह चीज स्थाई नहीं है । अपना स्वरूप ही सदैव रहने वाला है । इसलिए आत्म स्वरूप का ज्ञान करना चाहिए । वासनाओं के बंधन बड़े प्रबल हैं नियमित अभ्यास से मोह केबंधन काटने के लिए संसारी व्यक्ति को बहुत प्रयास करना है इसलिए नियमित अभ्यास द्वारा मृत्यु का नियंत्रण करना अभीष्ट है । बार-बार परमात्मा की कृपा और भाग्य से ही वासनाओं से विराग हो जाता है। राग का अभाव में सर्वत्र सहानुभूति होती है जीवन में सुधार आता है और मानसिक उत्थान होता है संतोष वृत्ति लाकर सहज जीवन जिया जा सकता है । श्रीमद् भागवत का कथन है कि आत्मानंद में रमण करने वाले आत्मज्ञानी को बाह्य जगत के झंझावात व्यथित नहीं करते । इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि के माध्यम से अपने जीवन को सुव्यवस्थित करना चाहिए ।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार सकारात्मक और आध्यात्मिक जीवन जीने की कुंजी वैराग्य का पीछा करना और करुणा, दयालुता और निस्वार्थता के गुणों को बढ़ावा देना है। यह गुण हमें केवल अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित होने के बजाय अपने आत्म सम्मान को त्यागने और दूसरों की तत्कालिकता पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करते हैं ।

अंततः श्रीमद्भगवद्गीता सिखाती है कि खुद को परमात्मा के साथ जोड़कर, सकारात्मक और आध्यात्मिक मानसिकता को बढ़ावा देकर हम जीवन की चुनौतियों और संघर्षों के बीच भी शांति, सद्भाव और संतुष्टि पा सकते हैं । यह एक कालातीत और स्थायी संदेश है जो आज भी सभी धर्म और परंपराओं के लोगों को प्रेरित और मार्गदर्शन करता है।

व्यक्तिगत मूल्य - व्यक्तिगत मूल्य वह है जो अपने वातावरण के अंदर और बाहर को परिभाषित और स्थिति देते हैं यह ऐसे गुण हैं जो व्यक्तिगत और सामूहिक मनोभावनात्मक क्षमताओं के विकास के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं इन मूल्यों को समाज शास्त्री कारकों द्वारा निर्धारित किया गया है विशिष्ट परवरिश के द्वारा जो प्रत्येक व्यक्ति के पास है और शायद एक अनुवांशिक प्रवृत्ति से यह अनुमान लगाया जाता है कि व्यक्तिगत मूल्य के माध्यम से व्यक्ति एक सुसंगत अस्तित्व का नेतृत्व कर सकते हैं।

व्यक्तिगत मूल्य महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि यह समाज के सह अस्तित्व की योजनाओं के भीतर व्यक्ति के सम्मिलन पर निर्भर करते हैं जहां यह जीवन से मेल खाता है ।

निर्णय लेते समय ये निर्णायक होते हैं क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति के मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार उपयुक्त मार्ग का संकेत करते हैं ।

वे सुरक्षा देने और सुसंगत को बढ़ावा देने का प्रबंधन करते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति के कृत्यों को उनकी सोच के अनुरूप बनाया जाता है ।

वे स्वायत्तता, स्थिरता और भावनात्मक परिपक्वता प्रदान करते हैं, व्यक्तित्व को परिभाषित करते हैं और पूर्ण व संतुलित जीवन के पक्ष में प्रत्येक व्यक्ति के कार्यों का समर्थन करते हैं ।

वे लोगों को अन्य व्यक्तियों के साथ मुखरता से संबंध रखने की अनुभूति देते हैं । वे विभिन्न वातावरण में सह अस्तित्व और अनुकूलन के लिए एक उपकरण है जिसमें वे विकसित होते हैं ।

वे एक मार्गदर्शक हैं जो समय के साथ भिन्न हो सकते हैं क्योंकि कुछ बदल सकते हैं लेकिन अनिवार्य रूप से नहीं बल्कि नई वास्तविकताओं के अनुकूल होने पर।

व्यक्तिगत मूल्य के उदाहरण -

1. धर्म
2. अनुशासन
3. शिष्टाचार
4. कृतज्ञता
5. सत्य के प्रति निष्ठा
6. दृढ़ता

7. स्वभाव्य निर्णय
8. आत्मसंयम
9. सहानुभूति
10. जोश
11. सहनशीलता
12. धैर्य
13. दया
14. एकजुटता
15. स्वतंत्रता
16. एहतियात
17. न्याय
18. ईमानदारी

व्यक्तिगत मूल्य व्यापक वांछनीय लक्ष्य है जो लोगों के कार्यों को प्रेरित करते हैं और उनके जीवन में मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं । व्यक्तिगत मूल्यों के उदाहरण में दान देना या परिवार के साथ समय बिताना शामिल है । हर किसी के पास मूल्य होते हैं लेकिन प्रत्येक व्यक्ति के पास मूल्य होता है । किसी व्यक्ति की संस्कृति व्यक्तिगत पालन पोषण जीवन के अनुभवों और कई अन्य प्रभावों से प्रभावित होते हैं ।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन -

जायसवाल अनुराग - श्रीमद्भगवद्गीता का यज्ञ दर्शन एक विवेचनात्मक अध्ययन शीर्षक पर शोध अध्ययन किया । इस शोध अध्ययन में उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यज्ञ एक व्यवस्थित एवं आदर्श लक्ष्य के लिए होने वाला कर्म है। यह यज्ञ का एक पक्ष हुआ, यज्ञ अपने दूसरे रूप में आत्म शुद्धि की क्रिया है। यज्ञ एक व्यापक एवं सार्वभौमिक अवधारणा है। यह सृष्टि के आरंभ से शुरू होकर प्राणियों एवं प्रकृति की घटनाओं में व्याप्त है। इस यज्ञ प्रणाली के प्रति सजग होकर हम जीवन शैली की प्रकृति के साथ तालबद्ध कर सकते हैं और समग्र रूप से जीवन का विकास कर सकते हैं।

इंडियन जो साइकोल मेड - 2012 मनोचिकित्सा - श्रीमद्भगवतगीता से उपचार पर शोध किया एवं निष्कर्ष में पाया कि भारतीय संदर्भ के लिए उपयुक्त मनोचिकित्सकीय विधान को विकसित करने के लिये एक स्रोत और मॉडल के रूप में श्रीमद्भगवतगीता पर चर्चा की गई। दूसरे अध्याय का तीसरा श्लोक अर्जुन की समृद्ध परत का चित्रण है जो भगवान श्री कृष्ण से मदद की प्रार्थना कर रहा है। 18 वें अध्याय का 73 वां श्लोक चिंता, चिता, अवसाद और बोध के विवेक अनुशासन और शक्ति के साथ कार्य करने के लिए तैयारी का सिद्धांत है। दूसरे अध्याय के तीसरे श्लोक और 18 वें अध्याय के 73 वें श्लोक के बीच जो कुछ हुआ वह प्रत्येक छात्र के लिये वैज्ञानिक जिज्ञासा का विषय है क्योंकि इसका परिणाम स्वरूप संकट से पूरी तरह राहत मिल गई।

कुशवाहा एस.एस. एवं ममता देवी -2015 आध्यात्मिक बुद्धि प्रत्यय परीक्षण एवं विकास पर शोध किया गया तथा यह निष्कर्ष पाया गया कि आत्म साक्षात्कार व्यक्ति के जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य

होता है । जब व्यक्ति आत्म साक्षात्कार की स्थिति में पहुँच जाता है तो अपने कार्यो द्वारा अपने जीवन को अधिक अर्थ पूर्ण मूल्यवान और दुसरो के दुखदर्द में सहायता करने हेतु व्यतीत करता है वह सामाजिक न्याय को महत्व देता है तथा अपना समय शक्ति व प्रतिभा का उपयोग सर्वहित हेतु करता है । अपने कार्यो का निरंतर अवलोकन कर व्यवहार में शोधन तथा रूपान्तरण की प्रवृत्ति ऐसे व्यक्तियों के व्यवहार में परिलक्षित होती है।

श्रीवास्तव डॉ. प्रज्ञा, अग्रवाल, डॉ.देवेन्द्र (10 अक्टूबर 2014) जीवन कौशल, मूल्य और व्यक्तिगत विकास शोध के अन्तर्गत निष्कर्ष में यह पाया कि वास्तव में कठिनाईयो कस बीच गुजरे बिना मनुष्य के व्यक्तित्व में पूर्णतया निखार नहीं आ पाता, जीवन मूल्यो को अपनाते हुए संघर्षमय जीवन मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशकर हीरे की तरह चमकाता है। जीवन संघर्षो से जीवन मूल्यो में एक ऐसी चमक पैदा होती है जिससे जीवन पथ के अंधकार और कांटे सहज दूर हो जाते हैं।

अध्ययन का उदेश्य -

1. श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक आंकलन करना ।
2. श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम का शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक आंकलन करना ।

अध्ययन की परिकल्पना -

H_{01} **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

H_{02} **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी ।

H_{03} **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा ।

H_{04} **परिकल्पना** श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा।

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया ।

शोध विधि -

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया ।

जनसंख्या -

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता द्वारा रायपुर के समस्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों का चयन किया गया ।

न्यादर्श:

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रुप में 480 विद्यार्थियों को चुना गया ।

अध्ययन का चर -

स्वतंत्र चर - श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन ।

आश्रित चर - 1. आध्यात्मिक बुद्धि ।

2. व्यक्तिगत मूल्य ।

उपकरण-

प्ररस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा आवश्यकतानुसार निम्नलिखित उपकरण का उपयोग किया जाएगा ।

क्रमांक	उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता
1.	गीता दर्शन मापनी	स्वनिर्मित प्रश्न
2.	आध्यात्मिक बुद्धि	के. एस. मिश्रा
3.	व्यक्तिगत मूल्य	मधुलिका वर्मा

02 माह का भगवद्गीता आधारित शिक्षण कार्यक्रम -

02 माह के भगवद्गीता के दर्शन पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम बनाया गया जिसमें सप्ताह में दो दिन 30 मिनट तक विद्यार्थियों को गीता दर्शन की जानकारी दी गयी । इसके अलावा भगवद्गीता के दर्शन से संबंधित आवश्यक जानकारी भी विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी गयी ।

भगवद्गीता के दर्शन पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम का विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि तथा व्यक्तिगत मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का परिणाम जानने के लिये अध्ययन अवधि के ठीक पूर्व तथा अध्ययन अवधि प्रारंभ होने के 02 माह के पश्चात आध्यात्मिक बुद्धि तथा व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रश्नावलियों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया । दो महीने का भागवतगीता आधारित शिक्षण कार्यक्रम के पश्चात छात्रों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में सकारात्मक परिवर्तन पाया गया । इस शैक्षिक कार्यक्रम में न केवल शैक्षिक ज्ञान की प्राप्ति हुई बल्कि छात्रों मे नैतिकता, आत्मनियंत्रण और जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने की क्षमता में वृद्धि पाई गई। इस दौरान छात्रों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलूओं पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया ।

सांख्यिकी अभिप्रयोग -

H_{01}परिकल्पना भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired Sample t test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.1 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1. 1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े

समूह	आध्यात्मिक बुद्धि				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	174.60	22.78	181.09	20.40	7.81**

तालिका 1.1 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 174.60 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 22.78 है ।
- 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान Mean) = 181.09 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 20.40 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 7.81 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।
- तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है ।

तालिका 1.1 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक H_{01} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक H_{02} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.2 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.2

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवदगीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर आंकड़े

समूह	आध्यात्मिक बुद्धि				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	174.17	22.37	179.23	21.41	5.06**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.2 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार

- आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 174.17 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 22.37 है ।
- 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् आध्यात्मिक बुद्धि पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 179.23 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 21.41 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 5.06 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए आध्यात्मिक बुद्धि पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।
- तालिकानुसार आध्यात्मिक बुद्धि पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण से अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक संवर्धन हुआ है ।

तालिका 1.2 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक H_{02} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि में सार्थक भिन्नता नहीं पायी जायेगी, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक H_{03} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.3 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.3

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री टेस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	92.00	10.60	100.68	11.84	12.07**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.3 में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार .

- व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 92.00 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 10.60 है ।
- 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 100.68 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 11.84 है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 12.07 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्नता सिद्ध होती है ।

अध्ययन में व्यक्तिगत मूल्य की गणना ईमानदारी, प्यार, सहायकता, निडरता, शिष्टाचार, वफादार, अनुशासन एवं स्वच्छता जैसे गुणांे के जरिए की गयी है । तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विश्वास, सिद्धांत तथा जीवन के दृष्टिकोण पर सकारात्मक प्रभाव डाला है जो कि उनके संवर्धित व्यक्तिगत मूल्य से परिलक्षित हो रहा है । अतः तालिका 1.3 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक H_{03} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

परिकल्पना क्रमांक H_{04} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक सुधार होगा । इस परिकल्पना को Paired sample 't' test से विश्लेषित किया गया । परिणाम तालिका 1.4 में दिये गये हैं ।

तालिका क्रमांक 1.4

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन अवधि के पूर्व तथा 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर आंकड़े

समूह	व्यक्तिगत मूल्य				t
	प्री पोस्ट (N=240)		पोस्ट टेस्ट (N=240)		
	Mean	S.D.	Mean	S.D.	
अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी	90.92	10.25	102.19	10.84	15.64**

t(df=239) at .05 level 1.97 and 2.60 at .01 level; ** Significant at .01 level

तालिका 1.4. में दिये गये सांख्यिकीय विश्लेषण के अनुसार

- व्यक्तिगत मूल्य स्केल पर अध्ययन अवधि के शुरु होने से पहले अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 90.92 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 10.25 है ।
- 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण के पश्चात् व्यक्तिगत मूल्य पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान (Mean) = 102.19 तथा प्रामाणिक विचलन (standard deviation) = 10.है ।
- Paired sample 't' test से गणना किये गये टी का मान 15.64 है । चूंकि गणना से प्राप्त टी का मान 239 स्वतंत्रता की कोटि पर टेबल मान 2.60 से अधिक है इसलिए व्यक्तिगत मूल्य पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट मध्यमान में .01 के सार्थकता स्तर पर भिन्न्ता सिद्ध होती है ।

तालिकानुसार व्यक्तिगत मूल्य पर अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के पोस्ट टेस्ट मध्यमान उनके प्रीटेस्ट मध्यमान से अधिक हैं जिसके अनुसार 02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण ने अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विश्वास, सिद्धांत

तथा जीवन के दृष्टिकोण पर सकारात्मक प्रभाव डाला है जो कि उनके संवर्धित व्यक्तिगत मूल्य से परिलक्षित हो रहा है । अतः तालिका 1.4 के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना क्रमांक H_{04} भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से 02 माह के शिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से पहले तथा बाद में अशासकीय उच्चतर

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य सार्थक रूप से भिन्न नहीं होंगे, अस्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष -

02 माह के भगवद्गीता दर्शन के माध्यम से शिक्षण का सार्थक एवं धनात्मक प्रभाव शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि एवं व्यक्तिगत मूल्य पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया ।

सुझाव -

1. शैक्षिक पाठ्यक्रम में गीता का समावेशः विद्यालय और कॉलेज के पाठ्यक्रम में गीता के कुछ अंशों का समावेश किया जा सकता है, ताकि विद्यार्थी आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को अपनाने में सक्षम हो सकें।

2. मूल्य और आध्यात्मिकता पर आधारित कार्यशालाएंः विद्यार्थियों में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के संवर्धन के लिए नियमित कार्यशालाओं का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें गीता के सिद्धांतों का प्रयोग किया जा सके।

3. समाज में जिम्मेदारी का प्रचारः विद्यार्थियों को समाज के प्रति उत्तरदायित्व का अनुभव कराने के लिए गीता के सिद्धांतों पर आधारित समूह चर्चा और सेवा गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है।

संदर्भग्रंथ सूची -

- परम पूज्य अनंत श्रीस्वामी चैतन्य अग्निशिखा ब्रह्मचारी जी महाराज - स्तवन पुष्पांजलि-पृष्ठ संख्या 4-6
- शर्मा श्रीराम आचार्य एवं पंड्या डॉ.प्रणव - शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की , आवश्यकता प्रकाशक - युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा ।
- मिश्रा डॉ.आद्या प्रसाद - श्रीमद्भगवद्गीता, प्रयागराज, अक्षयवट प्रकाशन, उपोद्घात।
- पाठक, पी.डी. - 2006, शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर ।
- कुशवाहा एस.एल. - 2015, आध्यात्मिक बुद्धि प्रत्यय, परीक्षण एवं विकास ।
- सिंह सुनीता - ''श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक निहितार्थ''।
- जैन डॉ. अमिता - 2018, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक बुद्धि का अध्ययन ।
- शेख डॉ. लियाकत मियां भाई - 2018, मानवीय मूल्यों की अवधारणा स्वरुप एवं महत्व।
- कपिल डॉ. एच. के. 2007 अनुसंधान विधियां भार्गव बुक हाउस आगरा ।
- भटनागर सुरेश 2007 शिक्षा मनोविज्ञान अशोक के घोष प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्रायवेट लिमिटेड न्यू दिल्ली ।
- 11. शर्मा डॉ. आर.ए. 2011 षिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया आर. लाल बुक डिपो मेरठ ।
- रिसर्च डाइजेस्ट, बहयुम-2, अक्टूबर-दिसम्बर 2008 ।
- राय पारसनाथ 1998 अनुसंधान परिचय लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ।
- श्रीवास्तव डी.एन. चर एवं उनका नियंत्रण मनोवैज्ञानिक अनुसंधान एवं मापन विनोद पुस्तक मंदिर

आगरा-2 ।